B.A. Part-II – Philosophy (H) paper-IV

## ह्यूम का कारणता विचार (Hume's View on Causality)

देकार्त आदि विचारकों ने कार्य-कारण संबंध को सहज प्रत्यय (Innate or apriori) माना है। इनका कहना है कि जिस तरह आत्मा, ईश्वर आदि का सहज प्रत्यय है, उसी तरह कार्य-कारण संबंध भी सहज प्रत्यय है। अब कार्य-कारण संबंध पर विचार करना है। यदि शरीर के किसी अंग में फोड़ा हो और उसमें दर्द हो तो पूछने पर दर्द (कार्य) का कारण फोड़े को ही बतलाया जायगा। "जब जनसाधारण यह कहता है कि 'ब' (दर्द) का कारण 'अ' (फोड़ा) है, तब यह मान लिया जाता है कि इन दो घटनाओं में अनिवार्य संबंध है जिसके कारण यदि 'ब' की बात कही जाय तो उसके पूर्ववाली घटना 'अ' का पता लगाया जा सकता है।" इस तरह कार्य-कारण में न केवल अनिवार्यता (Necessity) का संबंध होता है बल्कि अनुक्रमण (Succession) अर्थात् पूर्ववर्ती और अनुवर्ती का भी संबंध होता है। कार्य, कारण के ठीक बाद होता है। इससे यह भी पता होता है कार्य-कारण के बीच सामीप्य (contiguity) का संबंध होता है। दो घटनाओं में कोई अंतर (Gap) नहीं होता। कारण के समीप ही कार्य का क्रम रहता है। इतना ही नहीं, कार्य कारण को साधारणतः बुद्धि की उपज माना जाता है। इसका अनुभव से कोई संबंध नहीं। चूँकि इसका संबंध बुद्धि से है। इस कारण यह कार्य-कारण सिद्धान्त अनुभव निरपेक्ष (apriori) अनिवार्य (Necessity) और सार्वभौमिक (Universal) माना जाता है।

ह्यूम एक-एक कर कार्य-कारण तत्व का खंडन करते हैं। क्या कार्य-कारण संबंध का आविष्कार बुद्धि करती है? कदापि नहीं। कार्य-कारण संबंध का ज्ञान अनुभव से होता है। जब दो घटनाओं को बराबर साथ देखते हैं तो एक के आधार पर दूसरे के विषय में सोचते हैं। आग और गर्मी का संबंध क्या बुद्धि निर्धारित कर सकती है? नहीं। हमारा अनुभव ही बतलाता है कि आग में गर्मी है। "आदम (मनुष्य) आग की रोशनी और गर्मी को देखकर सहज रूप से अर्थात् अनुभव के पूर्व कदापि नहीं जान पाता कि आग उसे जला डालेगा।" किसी कारण से कार्य का पता लगाना असम्भव है। आग से उंगली जलेगी, इसे अनुभव के पूर्व हम कदापि नहीं जान सकते। कार्य-कारण दो भिन्न घटनाएं हैं। दो भिन्न

Scanned with CamScanner

घटनाओं का एक के आधार पर दूसरे का अनुमान संभव नहीं। ह्यूम ने कहा है – "For the effect is totally different from the cause and consequently can never be discovered in it." अनुभव से ही यह बात जानी जा सकती है कि भोजन से भूख मिटती है। ह्यूम ने कहा है– "That causes and effects are discoverable, not by reason but by experience." यदि कार्य-कारण की प्राप्ति अनुभव से होती है तो इसके आधार पर भविष्यवाणियां नहीं की जा सकती। अनुभव वर्तमान का होता है। आज आग में गर्मी है तो कल भी यही बात घटेगी, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

यह माना कि कार्य-कारण बुद्धि-प्रसूत नहीं अनुभव प्रसूत है। अब अनिवार्य संबंध के विषय में विचार करता हूँ। अनिवार्य संबंध का अर्थ होता है कि जिसके विपरीत नहीं सोचा जा सके। त्रिभुज के तीनों कोण मिलकर दो समकोण के बराबर होते हैं। यह एक अनिवार्य बात है। कोई भी व्यक्ति यह नहीं सोच सकता कि त्रिभुज के तीनों कोण मिलकर एक समकोण के बराबर होंगे। क्या ऐसी ही अनिवार्यता कार्य-कारण संबंध में है? ह्यूम का उत्तर है नहीं। हम लोग आग और गर्मी के विपरीत सोच सकते हैं। हम सोच सकते हैं कि आज आग जलाती है तो कल नहीं भी जला सकती है। आज सूर्य ताप देता है तो कल शीतलता देगी। अतः कार्य-कारण संबंध को अनिवार्य नहीं कहा जा सकता। उसी तरह यह भी सिद्ध होता है कि कार्य-कारण संबंध सार्वभौमिक नहीं है। अनुभव-प्रसूत कार्य-कारण संबंध का क्षेत्र हमारा वर्तमान जीवन है। अतः कार्य-कारण में सार्वभौमिकता (सार्वलौकिकता) के तत्व का भी अभाव है।

माना कि कार्य-कारण में अनिवार्य संबंध नहीं है, फिर एक विशेष कारण से एक विशेष कार्य का हम उम्मीद क्यों रखते हैं? इसका उत्तर ह्यूम यह कहकर देते हैं कि वस्तुएं किसी अनिवार्य संबंध में बंधी नहीं है बल्कि यह उनका बंधन मानसिक है। उनकी पुनरावृत्ति के कारण हमारा मन उनमें संबंध जोड़ देता है। दो प्रत्यय इतनी बार साथ-साथ आते हैं कि एक जब प्रकट होता है तो वह दूसरे को इंगित करता है। यहाँ पर हम तर्कशास्त्रीय अनिवार्यता नहीं वरन मानसिक अनिवार्यता पाते हैं। पशुओं

क्योंकि साधारण लोगों व दार्शनिकों में यह क्रिया समान है। हमारी मानसिक आदत हो जाती है कि एक घटना की उपस्थिति के विषय में सोचने लग जाते हैं। आग और उसकी गर्मी का इतनी बार प्रत्यक्ष होता है कि हमारे मन में इनके अनिवार्य संबंध जोड़ने की आदत पड़ जाती है। हम कल्पना करते लग जाते हैं कि भविष्य में आग, गर्मी अवश्य देगी। यह विश्वास ही हमारे ज्ञान का वास्तविक कारण है। "हमारे विचार कारण पर भले आश्रित हो, लेकिन कारण तथा मानसिक क्रियाओं (विश्वास) पर आश्रित है।" ह्यूम ने कार्य-कारण संबंध के विषय में लिखा है— "मैं इस मूर्खतापूर्ण सिद्धान्त का प्रतिपादन नहीं करता कि कोई भी कार्य अकारण हो सकता है, मेरे कथन का तात्पर्य इतना ही है कि कार्य-कारण भाव के अनिवार्य और सार्वलौकिक संबंध का ज्ञान न प्रत्यक्ष से होता है न अनुमान से।" किसी न किसी तरह अनुमान प्रत्यक्ष पर ही आधारित होता है। "यह संबंध हमारी कल्पना, मानसिक अभ्यास और विश्वास पर आधारित होता है।" यह नियम मानसिक है, तार्किक नहीं। इस नियम से ही वस्तु जगत क्रमबद्ध दीख पड़ते हैं। इसी नियम के आधार पर हम ज्ञात तथ्यों से अज्ञात तथ्यों की ओर प्रस्थान करते हैं। इसी नियम से हमारी चंचल संवेदनाओं में संबंध होता है और ज्ञान बनता है। यह वह नियम है जिससे विज्ञान निर्णय करता है।

इस तरह ह्यूम (Hume) ने कार्य-कारण अर्थात् कारणता संबंध की मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है। यही ह्यूम की सबसे महत्वपूर्ण देन है।

डॉ० राम नारायण शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
जे०आर०एस० कॉलेज, मुंगेर

Scanned with CamScanner